शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

शोध निर्देशक और शोधार्थी

डॉक्टर नरेश कुमार सिहाग, अध्यक्ष एवम् शोध निर्देशक हिंदी
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान।

शोध सार

शोध अंग्रेजी शब्द रिसर्च का पर्याय है। इसका अर्थ पुनः खोज नहीं अपितु गहन खोज है। शोध किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना होता है। पी.एचडी/डी.लिट् जैसी उपाधियां इसी उपलब्धि के लिए प्रदान की जाती हैं। इसमें अध्येता से अपने शोध के माध्यम से ज्ञान के कुछ नए तथ्य या आयाम उद्घापित करने की अपेक्षा की जाती है। शोधार्थी द्वारा किये गये शोध को विधिवत् प्रस्तुत करना जिसे शोध प्रबंध कहते हैं।

शोध निर्देशक का महत्वपूर्ण योगदान शोध की प्रक्रिया में होता है। वह शोधार्थियों को सहायता प्रदान करके उन्हें उनके शोध कार्य की दिशा में मार्गदर्शन करता है। उसके मार्गदर्शन से छात्र शोध के प्रारंभिक चरण से लेकर अंतिम प्रस्तावित परिणाम तक की प्रक्रिया को समय और संसाधनों के साथ संपन्न कर सकते हैं।

शोध कार्य को केवल शोधार्थी स्वयं ही पूरा नहीं कर सकता। इसके लिए शोधार्थी को निर्देशन की आवश्यकता होती है इसी कारण वह शोध निर्देशक का चुनाव करता है। शोध निर्देशक शोध कार्य की आधारशिला होती है, बिना शोध निर्देशक के शोधार्थी अपना शोध कार्य पूर्ण नहीं कर सकता है।

अच्छे शोध निर्देशक की मुख्य जिम्मेदारियाँ शोध प्रस्तावना तैयार करना, शोध की दिशा निर्धारित करना, शोध की मेथडोलॉजी विकसित करना, डेटा संग्रहण और विश्लेषण में मदद करना, और अंत में परिणामों को सही और सुसंगत तरीके से प्रस्तुत करना शामिल होती है।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

शोध निर्देशक का यह काम भी होता है कि वे छात्रों को उनके शोध प्रस्ताव को स्पष्ट और संरचित तरीके से प्रस्तुत करने में मदद करें, सिद्धांतों और संसाधनों का चयन करने में मदद करें और उन्हें उनके शोध कार्य में संकेत दें जो उनकी प्रक्रिया को और भी अधिक प्रभावी बना सकता है।

इसके साथ ही, शोध निर्देशक छात्रों को उनके शोध की प्रगति की निगरानी करने में भी मदद करते हैं और उन्हें आवश्यक सुझाव देते हैं ताकि वे अपने शोध के माध्यम से नई जानकारी को खोज कर सकें और उसमें महत्वपूर्ण योगदान कर सकें।

इस प्रकार, शोध निर्देशक शिक्षार्थियों को उनके शोध कार्य के प्रत्येक पहलु में मार्गदर्शन करके उनके शोध कौशल को स्थायी रूप से सुधारने में मदद करते हैं।

मुख्य शब्द:- निर्देशक, शोध, निगरानी, संदेश, दिशा, संगठन, संसाधन, सम्मेलन।

शोध कार्य में शोधार्थी को मार्गदर्शन करने वाला शोध निर्देशक होता है। सबसे पहले शोध निर्देशक को शोधार्थी की योग्यताओं के बारे में जानना चाहिए तथा उनके शोध ज्ञान को आगे बढ़वाने के लिए उसे धैर्य देना चाहिए, पूर्ण समय देना चाहिए। शोध निर्देशक के अंदर मेहनत, सहनशीलता, उत्साह, धैर्य, तटस्थता विचारशीलता होनी चाहिए, और शोधार्थी को उचित समय देने के लिए ध्यान रखना चाहिए। शोध निर्देशक को हमेशा अपने ज्ञान को नवीकृत अद्यतन करना चाहिए। इस तरह के गुण अगर शोध निर्देशक के अंदर होंगे तो वह अच्छा शोध निर्देशक माना जाता है।

शोध निर्देशक बनने के लिए आपको निम्नलिखित आवश्यकता होगी:-

1. 'शिक्षा और अध्ययन:- एक शोध निर्देशक बनने के लिए आपको संबंधित क्षेत्र में पदवी या डिग्री प्राप्त करनी होगी, जैसे कि डॉक्टरेट पी.एच.डी.।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

2. 'शोध कार्य और प्रक्षिप्ति:- आपको अपने क्षेत्र में उच्चस्तरीय शोध कार्य करना होगा और अपने शोध परिणामों को विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर प्रक्षिप्त करना होगा, जैसे कि अकेडमिक पेपर्स और सम्मेलनों में प्रस्तुतिकरण।

3. 'विशेषज्ञता का विकास:- आपको अपने क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करनी होगी, जिसमें आपकी शोध के परिणामों के साथ-साथ आपके अन्य ज्ञान और समर्पण दिखाने की क्षमता हो।

4. 'शोध परियोजनाओं की निगरानी:- आपको अन्य शोधकर्ताओं की शोध परियोजनाओं की निगरानी करनी होगी और उन्हें मार्गदर्शन करने की क्षमता होनी चाहिए।

5. 'शिक्षा-विकास:- आपको शिक्षा-विकास के क्षेत्र में भी योगदान देना होगा, जैसे कि छात्रों को मार्गदर्शन देने और उनके शोध प्रोजेक्ट्स में मदद करने के रूप में।

6. 'अनुसंधान संगठनों में सहयोग:- आपको अपने क्षेत्र में विभिन्न संशोधन संगठनों, और अन्य शोधकर्ताओं के साथ सहयोग करने के अवसर मिल सकते हैं।

याद रखें कि शोध निर्देशक बनने का प्रक्रिया आवश्यकताओं, अध्ययन, और प्रयासों की बड़ी श्रृंखला में होती है।

एक शोध निर्देशक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए:-

1. विशेषज्ञता:- शोध निर्देशक को अपने क्षेत्र में गहरी विशेषज्ञता होनी चाहिए ताकि वह छात्र को सही मार्गदर्शन प्रदान कर सके।

2. मार्गदर्शन कौशल:- वह छात्र को सही दिशा में मार्गदर्शन करने में सक्षम होना चाहिए, साथ ही छात्र के विचारों और प्रस्तावों का मूल्यांकन करने की क्षमता भी होनी चाहिए।

3. संवाद कौशल:- उचित संवादना और सुनने की क्षमता से युक्त होना चाहिए, ताकि वह छात्र की समस्याओं को समझ सके और उन्हें सही समय पर हल करने में मदद कर सके।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

4. शोध कौशल:- शोध निर्देशक को शोध की प्रक्रिया, डेटा विश्लेषण, और विविध शोध मेथडों की अच्छी समझ होनी चाहिए।

5. संवादना कौशल:- छात्र के साथ अच्छे संवादना कौशल रखना जरूरी है ताकि उनकी समस्याओं को समझ सकें और उन्हें सही दिशा में निर्देशित कर सकें।

6. मॉरल सपोर्ट:- छात्र को मार्गदर्शन के साथ-साथ मानसिकता में भी सहायता प्रदान करना जरूरी है।

7. समय प्रबंधन:- वह समय प्रबंधन कौशल का जानकार होना चाहिए ताकि वह अपने छात्रों के साथ समय से बातचीत कर सके और उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रख सके।

अच्छे शोध निर्देशक में कई खूबियाँ होती हैं, जैसे कि:-

1. दिशा-निर्देशन देना:- वे शोधकर्ताओं को उचित दिशा-निर्देशन और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जो उनके शोध कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने में मदद करता है।

2. संसाधन सहायता:- वे उन्हें संबंधित पुस्तकें, आलेख, डेटाबेस, और अन्य संसाधनों के बारे में जानकारी प्रदान करके सहायता करते हैं, जिससे शोधकर्ताओं की जानकारी विस्तारित होती है।

3. विचारों की प्रोत्साहना:- शोध निर्देशक उन्हें नए और उत्कृष्ट विचारों की प्रोत्साहना देते हैं ताकि उनका शोध अद्वितीय और उपयोगी हो।

4. विश्वास स्थापित करना:- वे शोधकर्ताओं के साथ निरंतर संवाद रखते हैं और उनका आत्म-विश्वास बढ़ाते हैं, जिससे उन्हें अपने कार्य में सफलता मिलती है।

6. प्रतिक्रिया और सुझाव:- उन्हें शोध के विभिन्न पहलुओं पर प्रतिक्रिया और सुझाव प्रदान करके शोधकर्ताओं को सहायता करते हैं।

7. नेटवर्किंग:- उन्हें आपके संदर्भ में अन्य शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों से मिलवाने में मदद करें, जिससे उनकी दृष्टिकोण विस्तारित हो सके।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

इन सुझावों के साथ, आप अपने शोधार्थी की प्रगति को समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करने में सहायक हो सकते हैं।

शोध निर्देशक की तरह शोधार्थी के अंदर भी निम्नलिखित गुण होने चाहिए। सबसे पहले उसे स्वस्थ शरीर व स्वस्थ मन का होना चाहिए। उत्साहपूर्ण लगन के साथ काम करना चाहिए। एक जगह रहकर शोध नहीं लिख सकते, इसलिए अपने काम के बारे में हमेशा ध्यान रखना चाहिए। शोध लिखना शुरू करने से पूर्व रचनात्मक कल्पना शक्ति को बढ़ाना चाहिए। तथ्य जमा करना, सतर्क रहना, साधन सम्पन्न आदि के बारे में भी शोधार्थी को सोचना चाहिए। शोधार्थी के गुणों में उत्साह, निरंतरता, उद्यमिता, विचारशीलता, तत्वार्थज्ञान, समर्पण और सहनशीलता शामिल होते हैं। शोधार्थी के गुणों में जिज्ञासाशीलता, धैर्य, निरंतरता, तत्वचिंतन क्षमता, समस्याओं के लिए समाधान ढूंढने की प्रतिबद्धता, और नए विचारों की प्रोत्साहना शामिल होती है।

शोधार्थी को शोध करते समय यह बातें ध्यान में रखनी चाहिए:-

1. विषय सीमा:- शोध का विषय सीमा स्पष्ट और सीमित होनी चाहिए, ताकि शोध केंद्रित और परिपूर्ण हो सके।

2. लेखकों का अध्ययन:- पहले से किए गए शोध और उनके लेखकों का अध्ययन करके शोधार्थी को विशेषज्ञता और मौजूद जानकारी का अध्ययन करना चाहिए।

3. संदर्भ सामग्री:- शोध के लिए सही संदर्भ सामग्री को चुनना महत्वपूर्ण है, जिससे कि शोधार्थी का काम समर्थक तथ्यों पर आधारित हो।

4. नवाचार और योगदान:- शोध को नवाचार और नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करें, ताकि उसमें मूल्यवान योगदान हो सके।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

5. तंत्रिका सामग्री:- शोध के लिए तंत्रिका सामग्री का सही उपयोग करें, जैसे कि डेटा, आँकड़े, चार्ट्स आदि।

6. संग्रहण और संग्रहण:- सभी सामग्री को संग्रहित रूप में रखें ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसका संदर्भ लिया जा सके।

7. विश्वसनीयता की जांच:- सामग्री की विश्वसनीयता की जांच करें और सत्यापन के स्रोतों का पता लगाएं।

8. संरचना और लेखन:- शोध को संरचित और स्पष्ट तरीके से प्रस्तुत करने के लिए उचित संरचना और लेखन का पालन करें।

9. समय प्रबंधन:- शोध के विभिन्न पहलुओं के लिए समय का ठीक आवंटन करें ताकि पूरा काम समय पर हो सके।

10. मार्गदर्शकों की सलाह:- अपने शोध मार्गदर्शकों से नियमित रूप से परामर्श लें और उनकी सलाह का पालन करें।

यह सुनिश्चित करने में मदद करेगा कि शोधार्थी अपने शोध कार्य को सटीकता और विशेषज्ञता से पूरा कर सकें।

शोध प्रबंध लिखते समय शोधार्थी को निम्नलिखित बातों का ध्यान देना चाहिए:-

1. 'स्पष्टता और मुद्दा निर्धारण:- सुरुवात में आपको शोध के विषय को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना होगा और विशिष्ट मुद्दों को चुनना होगा।

2. 'योजना बनाना:- शोध प्रबंध की योजना बनाने में समय देना महत्वपूर्ण है। किस तरह से आप अपने शोध को अनुभागों में विभाजित करना चाहते हैं, इसे व्यक्त करना होगा।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

3. 'पिछले शोध का परीक्षण:- प्राथमिक स्तर पर, पिछले शोध की सामग्री को समझना महत्वपूर्ण है, ताकि आपका काम पूराने शोध से अलग और प्रासंगिक हो सके।

4. 'संसाधन और स्रोत:- शोध के लिए आपके पास कौन-कौने से संसाधन उपलब्ध हैं, जैसे कि पुस्तकालय, डेटा बेस, आदि, उनका विवरण देना चाहिए।

5. 'उपयुक्त विधियाँ:- आपके शोध के लिए कौन-कौनसी विधियाँ या तकनीकें उपयुक्त हो सकती हैं, उन्हें स्पष्ट करना जरूरी है।

6. 'लेखन और संरचना:- शोध प्रबंध का लेखन स्पष्ट, संरचित और तार्किक दिशा में होना चाहिए।

7. 'समय संचालन:- शोध के विभिन्न चरणों के लिए समय संचालन का योजना बनाना जरूरी है, ताकि आप समय पर शोध पूरा कर सकें।

8. 'संदर्भ सूची:- आपके उपयोग किए गए स्रोतों की संदर्भ सूची तैयार करना महत्वपूर्ण है, ताकि पाठक आपके द्वारा उपयोग किए गए स्रोतों की पुनरावलोकन कर सकें।

9. 'संशोधन और संशोधित करना:- प्रबंध को लिखने के बाद, उसे संशोधित करें और आवश्यक बदलाव करें।

10. 'नैतिकता:- शोध करते समय नैतिकता बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है, जैसे कि उद्धरणों और स्रोतों की सही उपयोग करना।

यह सुनिश्चित करने में मदद करेगा कि आपका शोध प्रबंध संरचित और मान्य हो।

संदर्भ ग्रंथ:-

(1) निर्देशन एवं परामर्श, उत्तराखण्ड़ मुक्त विश्वविद्यालय, डाम्क्201 पाठ्यक्रम

(2) शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श, केवीदेव लाइब्रेरी, केन्द्रीय विद्यालय देवाली नाशिक

ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

(3) अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया, डॉ0 विनय कुमार पाठक, डॉ0 (श्रीमती) जयश्री शुक्ल, भावना प्रकाशन, दिल्ली 2010

(4) अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया, डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली 2002

(5) प्रभावशाली शिक्षण में शिक्षक की भूमिका, कालिका प्रसाद सेमवाल, प्रवाह पत्रिका मई-सितम्बर 2015

(6) अनुसंधान प्रविधि और क्रिया, डॉ0 एस0 एन0 गणेशन, प्रो0 मद्रास विश्वविद्यालय मद्रास, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2009

(7) अनुसंधान स्वरूप एवं आयाम, डॉ0 उमाकान्त एवं डॉ0 बृजरतन जोशी, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली 2016

(8) शोध प्रविधि विशेषांक 2020 बोहल शोध मंजूषा संपादक डॉक्टर नरेश सिहाग एडवोकेट

(9) शोध प्रविधि, गीना शोध संगम विशेषांक 2023 संपादक डॉक्टर रेखा सोनी।

(10) शोध प्रविधि, डॉ. प्रेम प्रकाश, डॉ. मनमीत कौर, डॉ. नीलम रूण्डा

(11) शोध प्रविधि, डॉ. विजय महादेव गाडे।